कथा सरिता

मैं हूँ ना...!

एक व्यक्ति का दिन बहुत खराब गया। उसने रात को ईश्वर से फ़रियाद की।

उसने कहा: 'भगवान, आप गुस्सा न हों तो एक प्रश्न पूछूँ?'

भगवान ने कहा: 'पूछ, जो पूछना हो पूछ।'

व्यक्ति ने कहा: 'भगवान, आपने आज मेरा पूरा दिन एकदम खराब क्यों किया?'

भगवान हँसे.....पूछा: 'पर हुआ क्या?'

व्यक्ति ने कहा: 'सुबह अलार्म नहीं बजा, मुझे उठने में देरी हो गई.....।'

भगवान ने कहा: 'अच्छा फिर.....!'

व्यक्ति ने कहा: 'देर हो रही थी, उस पर स्कूटर बिगड़ गया। मुश्किल से रिक्शा मिला।'

भगवान ने कहा: 'अच्छा फिर.....!'

व्यक्ति ने कहा: 'टिफ़िन ले नहीं गया था, वहाँ कैन्टीन भी बंद थी....एक सैन्डविच पर दिन निकाला, वो भी खराब थी।'

भगवान केवल हँसे.....

व्यक्ति ने फ़रियाद आगे चलाई, 'मुझे आवश्यक काम के लिए महत्वपूर्ण फ़ोन आया था और फ़ोन बंद हो गया।'

भगवान ने पूछा: 'अच्छा फिर...!'

व्यक्ति ने कहा: 'विचार किया कि जल्दी घर जाकर सो जाऊँ, पर घर पहुँचा तो लाईट नहीं थी। भगवान.... सब तकलीफें मुझे ही। ऐसा क्यों किया मेरे साथ?'

भगवान ने कहा: 'देख, मेरी बात ध्यान से सुन..., आज तुझ पर कोई आफ़त आनी थी। मैंने देवदूत को भेजकर अलार्म बजे ही नहीं ऐसा किया।

स्कूटर से एक्सीडेंट होने का डर था इसलिए स्कूटर बिगाड़ दिया। कैन्टीन में खाने से फूड प्वॉइज़न हो जाता। फ़ोन पर बड़ी काम की बात करने वाला आदमी तुझे बड़े घोटाले में फँसा देता। इसलिए फ़ोन बंद कर दिया।

तेरे घर में आज शॉर्ट सर्किट से आग लगती, तू सोया रहता और तुझे ख़बर ही नहीं पड़ती। इसलिए लाईट बंद कर दी!

मैं हूँ ना ....., मैंने सब तुझे बचाने के लिए किया।'

तो व्यक्ति ने कहा: 'भगवान, मुझसे भूल हो गई। मुझे माफ कीजिए। आज के बाद फ़रियाद नहीं करूंगा।'

भगवान ने कहा: 'माफी मांगने की ज़रूरत नहीं, परंतु विश्वास रखना कि मैं हूँ ना.., मैं जो करूंगा, जो योजना बनाऊंगा, वो तेरे अच्छे के लिए ही।

जीवन में जो कुछ अच्छा-खराब होता है, उसकी सही तस्वीर लम्बे वक़्त के बाद समझ में आती है।

मेरे कोई भी कार्य पर शंका न कर, श्रद्धा रख।

जीवन का भार अपने ऊपर लेकर घूमने के बदले मेरे कंधों पर रख दे।'

वक़्त रहते ही वैल्यू करें

एक औरत थी, जो अंधी थी। जिसके कारण उसके बेटे को स्कूल में बच्चे चिढ़ाते थे, कि अंधी का बेटा आ गया। हर बात पर उसे ये शब्द सुनने को मिलता था, कि "अन्धी का बेटा"। इसलिए वो अपनी माँ से चिढ़ने लगा। उसे कहीं भी अपने साथ लेकर जाने में हिचकता था। उसे नापसंद करता था..। उसकी माँ ने उसे पढ़ाया.. और उसे इस लायक बना दिया कि वो अपने पैरों पर खड़ा हो सके..। लेकिन जब वो बड़ा आदमी बन गया, तो अपनी माँ को छोड़ अलग रहने लगा। एक दिन बूढ़ी औरत उससे मिलने घर आई, और गेट पर खड़े चौकीदार से बोली: 'मुझे तुम्हारे साहब से मिलना है।' जब उसने अंदर जाकर उसके बेटे को बताया कि माता आपसे मिलने आई है, तो उसने कहा: 'बोल दो मैं अभी घर पर नहीं हूँ।' चौकीदार ने जब बुढ़िया से बोला कि वो अभी नहीं है, तो वो वहाँ से चली गयी..। थोड़ी देर बाद जब लड़का अपनी कार से ऑफिस के लिए जा रहा होता है। तो देखता है कि सामने बहुत भीड़ लगी है, और जानने के लिए कि वहाँ क्यों भीड़ लगी है, वह वहाँ गया तो देखा उसकी माँ वहाँ मरी पड़ी थी। उसने देखा कि उसकी मुट्ठी में कुछ है। उसने जब मुट्ठी खोली तो देखा कि एक लेटर है। उस लेटर में यह लिखा था कि 'बेटा! जब तू छोटा था तो खेलते वक़्त तेरी आँख में सरिया धंस गया था और तू अंधा हो गया था, तो मैंने तुम्हें अपनी आँखें दे दी थी।' इतना पढ़ कर लड़का ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा..। लेकिन अब उसकी माँ उसके पास नहीं आ सकती थी। दोस्तों, वक़्त रहते ही लोगों की वैल्यू करना सीखो। माँ-बाप का कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते।

जिसने तुझे यह समझाया...

एक बुढ़िया बड़ी सी गठरी लिए चली जा रही थी। चलते-चलते वह थक गई थी। तभी उसने देखा कि एक घुड़सवार चला आ रहा है। उसे देख बुढ़िया ने आवाज़ दी: 'अरे बेटा, एक बात तो सुन।' घुड़सवार रुक गया। उसने पूछा: 'क्या बात है माई?'

बुढ़िया ने कहा: 'मुझे उस सामने वाले गांव में जाना है। बहुत थक गई हूँ। यह गठरी उठाई नहीं जाती। तू भी शायद उधर ही जा रहा है। यह गठरी घोड़े पर रख ले। मुझे चलने में आसानी हो जाएगी।'

उस व्यक्ति ने कहा: 'माई तू पैदल है। मैं घोड़े पर हूँ। गांव अभी बहुत दूर है। पता नहीं तू कब तक वहां पहुंचेगी। मैं तो थोड़ी ही देर में पहुंच जाऊंगा। वहाँ पहुंचकर क्या तेरी प्रतीक्षा करता रहूंगा!' यह कहकर वह चल पड़ा।

कुछ ही दूर जाने के बाद उसने अपने आप से कहा: 'तू भी कितना मूर्ख है। वह वृद्धा है, ठीक से चल भी नहीं सकती। क्या पता उसे ठीक से दिखाई भी देता है या नहीं। तुझे गठरी दे रही थी। संभव है उस गठरी में कोई कीमती सामान हो। तू उसे लेकर भाग जाता तो कौन पूछता। चल वापस, गठरी ले ले। वह घूमकर वापस आ गया और बुढ़िया से बोला: 'ला अपनी गठरी। मैं ले चलता हूँ। गांव में रुककर तेरी राह देखूंगा।'

बुढ़िया ने कहा: 'ना बेटा, अब तू जा, मुझे गठरी नहीं देनी।'

घुड़सवार ने कहा: 'अभी तो तू कह रही थी कि ले चल। अब ले चलने को तैयार हुआ तो गठरी दे नहीं रही। ऐसा क्यों? यह उल्टी बात तुझे किसने समझाई है?'

बुढ़िया मुस्कुराकर बोली: 'उसी ने समझाई है जिसने तुझे यह समझाया कि माई की गठरी ले-ले। जो तेरे भीतर बैठा है, वही मेरे भीतर भी बैठा है। तुझे उसने कहा कि गठरी ले और भाग जा। मुझे उसने समझाया कि गठरी न दे, नहीं तो वह भाग जाएगा। तूने भी अपने मन की आवाज़ सुनी और मैंने भी सुनी।'

राजकोट-राजनगर। दिपावली के अवसर पर महानगर पालिका के सक्षम प्रोजेक्ट के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी संस्थान के द्वारा झोपड़पट्टी के गरीब बच्चों को कपड़े वितरण करते हुए ब्र.कु.रीटा तथा ब्र.कु.आशा।

उज्जैन। 'मीडिया के समक्ष मूल्य एवं चुनौतियां' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए भारतीय प्रेस परिषद के सदस्य राजीव रंजन नाग, विनोद नागर, संदीप कुलश्रेष्ठ, ब्र.कु.उषा, ब्र.कु. हेमलता, प्रो. कमल दीक्षित, ब्र.कु.सुशांत, राजेश राजोरे तथा अन्य।

भादरा-राज.। परमाराम गोदारा एग्रीकल्चर कॉलेज में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् कॉलेज के डायरेक्टर विकास गोदारा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चन्द्रकान्ता।

चुरू-राज.। दुधवाखारा में 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गिरीश। साथ हैं ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. शीतल तथा ब्र.कु. अनिल।

सोजत सिटी-राज.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित जागृति एवं शांति यात्रा का शुभारंभ करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. अंकिता, ब्र.कु. रुचि तथा अन्य।

सिरोही-राज.। खण्डेलवाल धर्मशाला में आयोजित सात दिवसीय चैतन्य देवियों की झाँकी एवं आध्यात्मिक मेले के अंतर्गत खण्डेलवाल छात्रावास के सभागार में 'सफल जीवन के लिए अलौकिक शक्तियों का महत्व' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, पूर्व विधायक संयम लोढ़ा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा, भाजपा जिलाध्यक्ष लुम्बाराम चौधरी, ब्र.कु. भूपाल, ब्र.कु. भरत व अन्य। सभा में शहर के आमंत्रित गणमान्य लोग।

सादुलशहर-राज.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. माधवी, ब्र.कु. सुमन, कृषि अधिकारी सुभाष चन्द्र, सहायक निदेशक आत्मा गुरमुख सिंह, ब्र.कु. दीक्षा, ब्र.कु. शीतल, ब्र.कु. गिरीश, कृ.पर्य. नक्षत्र सिंह, हुक्माराम, स.कृ.अ. करणजीत तथा अन्य।